M·A· I (SEMESTER) paper — CC-III

01

अर्द्धमागधी आगम साहित्य

इकाई - 3 - छेद सूत्र

Q1. आगम साहित्य में वर्णित छेद सूत्रों का क्रमबद्ध रूप से वर्णन करें ?

Ans- छेद सूत्र - जैन आगम का प्राचीन भाग है। इन सूत्रों में निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों की प्रायश्चित विधि का प्रतिपादन किया गया है। जीवन के दैनिक व्यवहार में सावधान रहने पर भी दोष का होना स्वाभाविक है, अतः उन लगे हुए दोषों का पश्चाताप द्वारा परिमार्जन करना ही प्रायश्चित है। छेद सूत्र को उत्तम श्रुत कहा जाता है।

छेद सूत्रों की संख्या - 6 है। जो इस प्रकार है।

(1) निशीथ (2) महानिशीथ (3) व्यवहार (4) दशा श्रुत स्कंध (5) कल्पसूत्र (6) पंचकल्प

(1) निशीथ → छेद सूत्रों में निशीथ का सबसे अधिक महत्वपूर्ण स्थान है। इसे आयारङ्ग सूत्र की दूसरी चूला के रूप में माना जाता है। इसका दूसरा नाम आचार कल्प भी है। साधु और साध्वियों के आचार - विचार सम्बन्धी नियमों का निरूपण है तथा इन नियमों के उत्सर्ग एवं अपवाद मार्ग भी वर्णित है।

निशीथ 20 उद्देशों में विभक्त है। प्रथम उद्देश में ब्रह्मचर्य के पालन करने के नियमों का वर्णन है। ब्रह्मचारी साधु को अंग संचालन करना एवं सुगन्धित पुष्प आदि का सूंघना वर्जित है।

द्वितीय उद्देश्य में भिक्षुओं को चर्म रखने तथा काष्ठ के दण्डवाले रजोहरण के रखने का निषेध किया गया है। जूता पहनने तथा बहुमूल्य वस्त्र धारण करने का निषेध किया गया है।

Scanned with CamScanner

तृतीय उद्देश मे भिक्षा-वृत्ति की विधि का निरूपण है पैरो का मर्दन, प्रक्षालन, प्रमार्जन आदि का निषेध है।
चतुर्थ उद्देश मे — भिक्षु-भिक्षुणियों के उपाश्रय में रहने की विधि का निरूपण है। कुशल और आडम्बरी साधुओं के साथ रहने का निषेध है।
पंचम उद्देश मे → वृक्ष के नीचे बैठकर स्वाध्याय तथा आलोचना करने का निषेध है। छठे एवं सातवे उद्देश मे मैथुन एवं मैथुन सम्बन्धी अन्य क्रियाओं का निषेध है। आठवे उद्देश मे उद्यान एवं उद्यान गृह में अथवा अन्य किसी एकान्त स्थान मे भिक्षुणियों के साथ रहने का निषेध है।

(2) महानीशिथ → इस छेद सूत्र को समस्त प्रवचन का सार कहा जाता है। निशीथ को लघु निशीथ और इसे महानिशीथ कहा गया है। बाद मे हरिभद्रसूरि ने इसका संशोधन किया और सिद्धसेन, जिनदास गणि ने इसे मान्यता प्रदान की है। इसके आधार पर इस ग्रन्थ मे छः अध्ययन है और दो चूला है।
प्रथम और द्वितीय अध्ययन मे पाप कर्मों की निन्दा और आलोचना की गयी है। तृतीय और चतुर्थ अध्ययन में — साधुओं को कुशील साधुओं के सम्पर्क से बचने का उपदेश दिया गया है।
पंचम अध्ययन मे — गुरु शिष्य के सम्बन्ध का निरूपण किया गया है। छठवे अध्ययन मे प्रायश्चित और आलोचना किया गया है।

(3) व्यवहार → तीसरा छेद सूत्र का नाम व्यवहार छेद सूत्र है। इस ग्रन्थ के कर्ता श्रुत केवली भद्रबाहु को माना जाता है। इस सूत्र पर भाष्य और नियुक्ति भी है। इस ग्रन्थ मे दस (10) उद्देशक है। इन उद्देशकों मे आलोचना गर्हा, निन्दा के साथ प्रायश्चित ग्रहण

करने, साधु-साध्वियों के भोजन, व्यवहार, एकाकी विहार तथा समूह में विहार संबंधी नियम का उल्लेख किया गया है।

(4) दशाश्रुत स्कंध (दस सुयक्खंध) → इस ग्रंथ के रचयिता आचार्य भद्रबाहु माने गये हैं। यह ग्रंथ दस(10) अध्ययनों में विभक्त है। इसमें आठवें और दसवें विभाग को अध्ययन और शेष विभागों को दशा कहा गया है।

इन अध्ययनों में हस्त-कर्म मैथुन, प्रयोग संग्रह संपदा का कथन किया गया है। रात्री भोजन राजपिण्ड ग्रहण आचार श्रुत-वचन कथन किया गया है। साथ ही इसमें भगवान महावीर के गर्भ जन्म, दीक्षा, केवल ज्ञान और निर्वाण - पंच कल्याणकों, जीवन-चरित का वर्णन किया गया है।

इस ग्रंथ के अंत में मोहनीय के तीस बंध स्थान और नौ प्रकार के निदानों का निरूपण किया गया है।

(5) कल्प (कप्प) → पाँचवें छेद सूत्र का नाम कल्प छेद सूत्र है। यह ग्रंथ 6 उद्देशकों में विभक्त है। इन छः उद्देशकों में साधु-साध्वियों के संयम के साधक एवं बाधक स्थान, वस्त्र, पात्र, आहार, विहार, अध्ययन, उपाध्यान आदि संबंधी विस्तृत नियमों का निरूपण किया गया है। साथ ही इसमें साधु-साध्वियों के परस्पर सहयोग भावना का भी उल्लेख किया गया है।

(1) प्रथम उद्देशक में निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों के नियम निवास का विस्तृत वर्णन प्रथम उद्देशक के 51 सूत्रों में किया गया है। (2) दूसरा उद्देशक → में भी निवास और विहार के नियम ही प्रतिपादित हैं।

(3) तीसरा उद्देशक → निर्ग्रन्थ और निर्ग्रन्थियों के एक दूसरे के उपाश्रय में आने जाने की मर्यादा का उल्लेख किया गया है। (4) चौथे उद्देशक में → प्रायश्चित और

आचार विधि का निरूपण है। (5) पाँचवे उद्देशक में सूर्योदय के पूर्व और सूर्योदय के पश्चात भोजन पान के सम्बन्ध में नियम का निरूपण किया है। (6) छठे उद्देशक में दुर्वचन बोलने का उद्देश्य का निषेध किया गया है।

(6) पंचकप्प (पंचकल्प) — छठे सूत्र का नाम पंचकल्प सूत्र है। इस सूत्र में भी साधु और साध्वियों के रहने, विहार करने एवं आहार ग्रहण करने का नियमोपनियम वर्णित है।